उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुरीतियों का अध्ययन

डॉ. सरोज राय*

शिक्षा सभ्य सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील मानव समाज के लिए एक आधारशिला का निर्माण करती है। शिक्षा ही वह साधन है जो मनुष्य और जानवर या अन्य प्राणियों में अन्तर करती है, शिक्षा ही वह ज्योति पुंज है जो मानव के मस्तिष्क के अंधकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश आलोकित करती है। शिक्षा हमारी समस्याओं को सुलझाकर सुसंस्कृत बनाती है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास करना है, विद्यालय इन समस्त उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होता है, जिसके फलस्वरूप राष्ट्र के योग्य नागरिकों का निर्माण होता है। वर्तमान युग के प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में शिक्षा चहुमुंखी विकास कर रही है। 1986 शिक्षा नीति, संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1992 में शिक्षा के द्वारा लिए अनेक कारगर कदम उठाये गये हैं कि शिक्षा में सुधार हो सके। 2020 नई शिक्षा नीति भी वर्तमान भारत सरकार ने लागू कर दी है फिर भी अनेक कुरीतियां विद्यार्थी के विकास में कहीं न कहीं बाधा उपस्थित कर ही देती है। चाहे वह विद्यार्थी किसी भी वर्ग का क्यों न हो।

विद्यार्थियों, शिक्षक, समाज, अभिभावक, शिक्षाविद, समाजशास्त्री, शिक्षा व्यवस्था, मनोवैज्ञानिक, कुरीतियों को दूर करने का प्रयास कर सकते हैं जिससे समाज प्रगति की ओर अग्रसर हो सकेगा। विद्यार्थियों का चहुंमुखी विकास हो सके क्योंकि विद्यार्थी ही समाज की आधारशिला है। विद्यार्थियों में नये ज्ञान का प्रचार–प्रसार वैज्ञानिक तर्क देकर, व्यावहारिक उदाहरणों से समाज में तथा विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों में व्यापत कुरीतियों को दूर किया जा सकता है। क्योंकि इन कुरीतियों के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः इस शोध के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीति को कम किया जा सकता है जिससे समाज, शिक्षक, शिक्षा व्यवस्था, अभिभावको के दृष्टिकोण को परिवर्तित करते हुए राष्ट्र निर्माण में सकारात्मक विचारों का आदान–प्रदान करते हुए विकास का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

मुख्य बिन्दु : उच्च, माध्यमिक, स्तर, विद्यार्थी, कुरीति, अध्ययन

प्रस्तावना :

शिक्षा सभ्य सुसंस्कृत एवं प्रगतिशील मानव समाज के लिए एक आधारशिला का निर्माण करती है। शिक्षा ही वह साधन है जो मनुष्य और जानवर या अन्य प्राणियों में अन्तर करती है, शिक्षा ही वह ज्योति पुंज है जो मानव के मस्तिष्क के अंधकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश आलोकित करती है। शिक्षा हमारी समस्याओं को सुलझाकर सुसंस्कृत बनाती है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास करना है, विद्यालय इन समस्त उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होता है, जिसके फलस्वरूप राष्ट्र के योग्य नागरिकों का निर्माण होता है। वर्तमान युग के प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में शिक्षा चहुमुंखी विकास कर रही है। 1986 शिक्षा नीति, संशोधित राष्ट्री शिक्षा नीति 1992 शिक्षा के द्वारा लिए अनेक कारगर कदम उठाये गये हैं कि शिक्षा में सुधार हो सके। 2020 नई शिक्षा नीति भी वर्तमान भारत सरकार ने लागू कर दी है फिर भी अनेक कुरीतियां विद्यार्थी के विकास में कहीं न कहीं बाधा उपस्थित कर ही देती है। चाहे वह विद्यार्थी किसी भी वर्ग का क्यों न हो।

इस प्रकार वैज्ञानिक ज्ञान तथा तकनीकी विस्तार के फलस्वरूप विद्यार्थी अनेक ऐसी गलत धारणाओं का शिकार हो रहा है जिससे विद्यार्थी मानसिक रूप से ही भ्रमित नहीं हो रहा है बल्कि उसका शैक्षिक, सामाजिक विकास का मार्ग भी बाधित हो रहा है।

कुरीतियां:

मानवीय सम्बन्धों से सम्बन्धित एक समस्या है जो समाज के लिए गंभीर खतरा पैदा करती है। सामाजिक, कुरीतियों से तात्पर्य एक ऐसी स्थिति से होता है जिससे समाज का एक बड़ा भाग प्रभावित होता है इन परिस्थितियों में सामाजिक एकता खंडित प्रतीत होती है। जिससे हानिकारक परिणाम प्राप्त होते है। इस प्रकार हम देखते है हमारी विभिन्नताएं जो हमारी पहचान है। वह भी अनेक प्रकार की कुरीतियों को जन्म देती है। भारतीय मध्यम वर्ग में जो अनेक कुरीतियों व्याप्त है जिनमें विवाह सम्बन्धी कुरीतियों का स्थान महत्वपूर्ण है जैसे–दहेज प्रथा। सामाजिक कूरूतियां एक ऐसी कष्टप्रद दशा है जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, शिक्षा, संस्कार सभी के विकास की दृष्टि में बाधक है। इन असामंजस्य पूर्ण शक्तियों एवं उनके परिणामों को रोकने के लिए सामाजिक क्रिया एवं नियन्त्रण आवश्यक है।

किसी भी कुरीति को सामाजिक समस्या के रूप में समझने के लिए मनुष्य को कई अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है क्योंकि लोगों को यह दृढ़ विश्वास हो कि वह परिस्थिति मूल्य व्यवस्था की दृष्टि से अनुचित है। कुरीति के निवारण के लिए अनुरूप साधन ढूंढने की आवश्यकता है तथा उसकी क्रियान्वित कर सुधार लाने की भी आवश्यकता है। समाज में अनेक कुरीतियां बाधा बनकर खड़ी है जैसे–कन्या भ्रूण हत्या, बाल–विवाह, दहेज प्रथा,

*सहायक आचार्या, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं–राजस्थान

मद्यपान, मादक द्रव्य का सेवन, लिंगभेद अपृश्यता, देवदासी प्रथा, बाल–अपराध, तलाक तथा मृत्युभोज आदि। हमारी सामाजिक कुरीतियां राष्ट्र विकास के लिए अवरोधक है। इनकी जड़े इतनी गहरी है इन्हें सामूहिक प्रयासों द्वारा ही दूर किया जा सकता है। समाज में व्याप्त मान्यताएं या प्रचलित कुप्रथाएं जो तिल से ताड़ बनकर समाज को विनाश की ओर अग्रसर करती है कुरीतियां कहलाती है।

स्वस्थ समाज व राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक है कि समाज, राष्ट्र के निवासी परम्परागत रूढ़िवादी विचारों को त्यागकर नवीन वैचारिक ज्ञान का प्रचार–प्रसार करें तथा नवीन चिंतन कर स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाएं जिससे राष्ट्र के विकास की दिशा उन्नति के नये आयामों को छू सके तथा राष्ट्र कल्याण कर सके।

समस्या का औचित्य :

आज विज्ञान के ज्ञान के प्रकाश से शिक्षा क्षेत्र आलोकित हो रहा है फिर भी समाज में व्याप्त कुरीतियां व्यापक रूप से फैली हुई है। जो सबसे अधिक विद्यार्थी वर्ग के विकास में बाधक तत्व के रूप में खड़ी है। विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति हेतु कुरीतियों की प्रवृत्ति का अध्ययन करना अति आवश्यक है जिससे उन्हें भविष्य के लिए उचित दिशा निर्देश दिया जा सके। इस अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों में पनप रही अनेक गलत धारणाओं का शिकार होने से बचाया जा सकता है तथा उन्हें उनके सुनहरे भविष्य की ओर अग्रसर किया जा सकता है। इसी को आधार मानकर शोध हेतु उपर्युक्त विषय का चयन किया गया है।

समस्या कथन :

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुरीतियों का अध्ययन''

शोध के उद्देश्य :

1. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में कुरीतियों का अध्ययन करना।
2. विज्ञान वर्ग के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की कुरीतियों का अध्ययन करना।
3. कला वर्ग के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की कुरीतियों का अध्ययन करना।
4. विज्ञान वर्ग की छात्राओं की कुरीतियों का अध्ययन करना।
5. कला वर्ग की छात्राओं की कुरीतियों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :

1. ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की कुरीतियों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. विज्ञान वर्ग के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की कुरीतियों में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. कला वर्ग के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की कुरीतियों में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. विज्ञान वर्ग की छात्राओं की कुरीतियों में सार्थक अन्तर नहीं है।
5. कला वर्ग की छात्राओं की कुरीतियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या व न्यादर्श :

न्यादर्श चयन हेतु यादृच्छिक स्तरीकृत विधि का प्रयोग किया है। उच्च माध्यमिक विद्यालय के 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :

मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण : स्वनिर्मित कुरीति मापनी का प्रयोग किया है।

परिकल्पना–1 : ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की कुरीतियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

संकाय	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्य मान (M)	मानक विचलन (SD)	टी मान (t)	मानक त्रुटि (SED)	स्वतन्त्रता के अंश (df)	सार्थकता स्तर	निष्कर्ष
कला	30	91.76	12.6	4.2	1.96	118	0.05 (1.98)	अस्वीकृत
विज्ञान	30	83.41	8.65				0.01 (2.62)	

विश्लेषण :

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में कुरीतियों के स्तर के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 91.76, 83.41 तथा मानक विचलन क्रमश 12.6, 8.65 व मानक त्रुटि 1.96 है तथा टी का मान 4.2 प्राप्त हुआ हे। जो df=118 के लिए टी का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर 1.98 व 0.01 स्तर पर 2.62 है, जबकि टी का मान 4.2 प्राप्त हुआ है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना–2 : विज्ञान वर्ग के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की कुरीतियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

विश्लेषण :

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की कुरीतियों के स्तर के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 90.46, 83.76 तथा मानक विचलन क्रमश 1.6, 9.58 व मानक त्रुटि 2.25 है तथा टी का मान 2.27 प्राप्त हुआ हे। जो df=58 के लिए टी का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर 2.00 व 0.01 स्तर पर 2.66 है, जबकि टी का मान 2.27 प्राप्त हुआ है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है। क्योंकि टी का मान सार्थकता स्तर से कम है।

परिकल्पना–3 : उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की कुरीतियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

संकाय	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मानक त्रुटि (SED)	स्वतन्त्रता के अंश (df)	टी मान (t)	सार्थकता स्तर	निष्कर्ष
कला	30	93.06	12.09	2.64	58	3.7	0.05 (2.00)	अस्वीकृत
विज्ञान	30	83.06	7.94				0.01 (2.26)	

विश्लेषण :

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की कुरीतियों के स्तर के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 93.06, 83.06 तथा मानक विचलन क्रमश 12.09, 7.94 व मानक त्रुटि 2.64 है तथा टी का मान 3.7 प्राप्त हुआ हे। जो df=58 के लिए टी का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर 2.00 व 0.01 स्तर पर 2.66 है, जबकि टी का मान 3.7 प्राप्त हुआ है। जो सार्थकता के दोनों स्तरों से अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना–4 : विज्ञान वर्ग की छात्राओं की कुरीतियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

संकाय	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मानक त्रुटि (SED)	स्वतन्त्रता के अंश (df)	टी मान (t)	सार्थकता स्तर	निष्कर्ष
कला	30	85.06	13.14	3.0	58	1.3	0.05 (2.00)	स्वीकृत
विज्ञान	30	89.16	9.89				0.01 (2.26)	

विश्लेषण : प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग की छात्राओं में कुरीतियों के स्तर के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 85.06, 89.16

संकाय	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मानक त्रुटि (SED)	स्वतन्त्रता के अंश (df)	टी मान (t)	सार्थकता स्तर	निष्कर्ष
कला	30	90.46	1.6	2.25	58	2.27	0.05 (2.00)	अस्वीकृत
विज्ञान	30	83.76	9.58				0.01 (2.26)	

तथा मानक विचलन क्रमश 13.14, 9.89 व मानक त्रुटि 3.0 है तथा टी का मान 1.3 प्राप्त हुआ है। जो df=58 के लिए टी का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर 2.00 व 0.01 स्तर पर 2.66 है, जबकि टी का मान 1.3 प्राप्त हुआ है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना–5 : कला वर्ग की छात्राओं की कुरीतियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

संकाय	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मानक त्रुटि (SED)	स्वतन्त्रता के अंश (df)	टी मान (t)	सार्थकता स्तर	निष्कर्ष
कला	30	87	12.96	2.9	58	0.73	0.05 (2.00)	स्वीकृत
विज्ञान	30	89.13	9.2				0.01 (2.26)	

विश्लेषण :

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग की छात्राओं की कुरीतियों के स्तर के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 87, 89.13 तथा मानक विचलन क्रमश 21.96, 9.2 व मानक त्रुटि 2.9 है तथा टी का मान 0.73 प्राप्त हुआ है। जो df=58 के लिए टी का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर 2.00 व 0.01 स्तर पर 2.66 है, जबकि टी का मान 0.73 प्राप्त हुआ है। यह सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

शोध के निष्कर्ष :

- विद्यार्थी किसी भी समाज का आने वाला भविष्य हाता है इनका सही तरह से समाजीकरण हो तथा तथा सामाजिकता के गुणों का विकास हो यह आवश्यक है। क्योंकि तभी विद्यार्थी आने वाला समाज का बेहतर निर्माण कर सकते है तथा कुरीतियों से मुक्त देश का विकास सही दिशा में कर सकते हैं।
- जिस समाज के विद्यार्थियों में रूढ़िवादी विचारों का स्तर जितना कम होगा उनका वैज्ञानिक ज्ञान, स्वरूप, वैचारिक दृष्टिकोण जितना अधिक स्वस्थ होगा वह समाज उतनी ही शैक्षिक, वैज्ञानिक, वैचारिक रूप से विकसित और सुदृढ़ होगा।

- समाज के विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों में व्याप्त कुरीतियों की प्रवृत्ति के स्तर का पता लगाकर उसको वैज्ञानिक तरीकें से दूर करने का प्रयास किया जा सकता है तथा विभिन्न समाज में व्याप्त कुरीतियों को विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक समाज को अवगत कराकर तर्क पूर्ण ज्ञान प्रदान करते हुए उन्हें दूर करने का प्रयास किया जा सकता है।
- अभिभावक, शिक्षक समाज में व्याप्त कुरीतियों को पहचान कर विद्यार्थियों के वैचारिक दृष्टिकोण को कम करने के लिए उनके विरूद्ध तर्क पूर्ण मत प्रस्तुत करते हुए सही दिशा में मार्गदर्शन करके सकारात्मक विकास किया जा सकता है। जिससे अध्यापक एवं शिक्षा से जुड़े विभिन्न धर्मों के व्यक्तियों के माध्यम से राष्ट्र की विकासात्मक दिशा को सुदृढ़ता, सक्षमता तथा मजबूती प्रदान की जा सकेगी।
- अभिभावक, शिक्षक समाज का दृष्टिकोण बदलने से वैचारिक मजबूती तथा सही मार्गदर्शन एक वरदान की तरह साबित होगा।
- इसके कम हाने से नवीन समाज, शिक्षा व्यवस्था, समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण गलत वैयक्तिक धारणाओं से मुक्ति तथा अशिक्षित अभिभावकों के परम्परागत विचार, विद्यार्थी की सोच का स्तर को मनोवैज्ञानिक रूप से दूर किया जा सकता है। अर्थात् उनकी मानसिक प्रवृति को दूर करने का प्रयास किया जा सकता है।
- ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों तथा कॉलेज विद्यार्थियों में व्याप्त कुरीतिकी धारणा को धार्मिक शिक्षा को वैज्ञानिक उदाहरणों के माध्यम से तर्क प्रस्तुत करते हुए सामाजिक विश्वासों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना होगा तभी समाज एक नई दिशा में मार्ग प्रशस्त करेगा।
- विद्यार्थियों में सामाजिक परम्पराओं, विश्वासों को प्रजातांत्रिक मूल्यों, सौन्दर्यात्मक मूल्यों, पारिवारिक मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ :

विद्यार्थियों, शिक्षक, समाज, अभिभावक, शिक्षाविद, समाजशास्त्री, शिक्षा व्यवस्था, मनोवैज्ञानिक, कुरीतियों को दूर करने का प्रयास कर सकते हैं जिससे समाज प्रगति की ओर अग्रसर हो सकेगा। विद्यार्थियों का चहुंमुखी विकास हो सके क्योंकि विद्यार्थी ही समाज की आधारशिला है। विद्यार्थियों में नये ज्ञान का प्रचार–प्रसार वैज्ञानिक तर्क देकर, व्यावहारिक उदाहरणों से समाज में तथा विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों में व्यापत कुरीतियों को दूर किया जा सकता है। क्योंकि इन कुरीतियोंके कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः इस शोध के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीति को कम किया जा सकता है जिससे समाज, शिक्षक, शिक्षा व्यवस्था, अभिभावको के दृष्टिकोण को परिवर्तित करते हुए राष्ट्र निर्माण में सकारात्मक विचारों का आदान–प्रदान करते हुए विकास का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ–सूची :

1. कपिल, एच.के. (2008), अनुसंधान विधियां, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा
2. शर्मा, एल.एल. (2007), शिक्षा तथा भारतीय समाज, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
3. शर्मा, एस. (2007), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, श्याम प्रकाशन, जयपुर
4. पाण्डेय, रामशक्ल (2007), नई शिक्षानीति, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
5. कपिल, एच.के. (2005), सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6. राय कुमार, चन्द्र एस. (2004), भारतीय सामाजिक समस्याएं, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
7. भट्ट, कृष्ण दत्त (2000), सामाजिक विघटन और भारत बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी
8. पाण्डेय तेजस्कर, पाण्डेय, संगीता (2000), भारत में सामाजिक समस्याएं, Tata Mc Graw Hill जयपुर
9. चतुर्वेदी, प्रतिमा (1998), भारत में सामाजिक समस्याएं, वाइकिंग बुक्स, जयपुर
10. बुच, एम.बी. (1997), ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, बडौदा, पब्लिकेशन, बडौदा

पत्र–पत्रिकाएं

भारतीय आधुनिक शिक्षा (2011), जुलाई–अक्टूबर, शिविरा पत्रिका अप्रैल

बुच, एम. बी. फार्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन वॉल्यूम (2013), प्रथम नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी., युवादृष्टि.

वेबसाईट. www.wikipiedia.com